RNI No. DELHIN/2017/74159

ISSN 2581-8856

16

सृजन सरोकार

वर्ष 6 / अंक 1 / अक्टूबर-दिसम्बर 2022

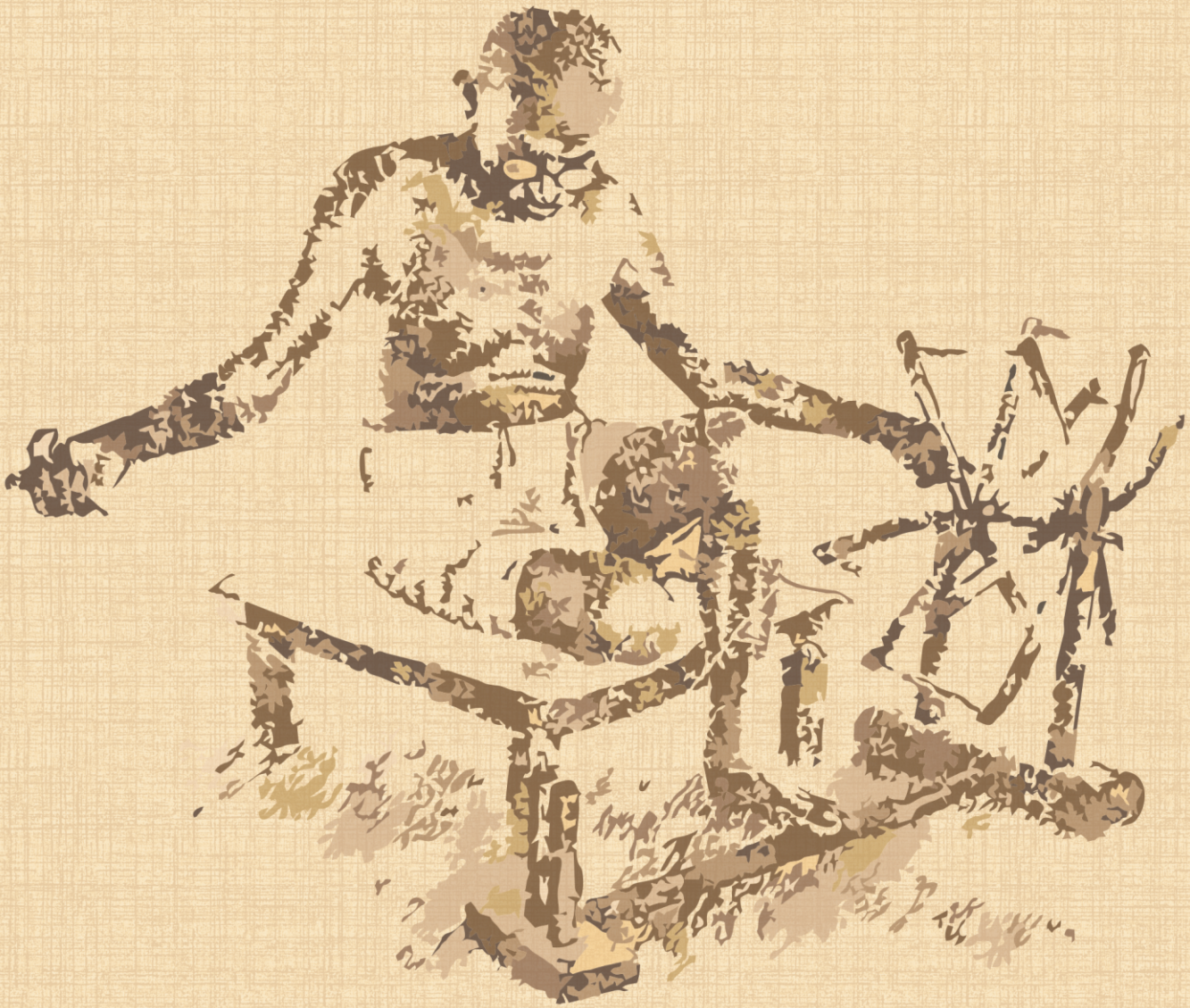

गांधी में आज के गांधी की खोज

आवरण : अजय जैतली

गांधी जी का जन्तर

तुम्हें एक जन्तर देता हूं। जब भी तुम्हें सन्देह हो या तुम्हारा अहम् तुम पर हावी होने लगे, तो यह कसौटी आजमाओ:

जो सबसे गरीब और कमजोर आदमी तुमने देखा हो, उसकी शकल याद करो और अपने दिल से पूछो कि जो कदम उठाने का तुम विचार कर रहे हो, वह उस आदमी के लिए कितना उपयोगी होगा। क्या उससे उसे कुछ लाभ पहुंचेगा? क्या उससे वह अपने ही जीवन और भाग्य पर कुछ काबू रख सकेगा? यानि क्या उससे उन करोड़ों लोगों को स्वराज्य मिल सकेगा जिनके पेट भूखे हैं और आत्मा अतृप्त है?

तब तुम देखोगे कि तुम्हारा सन्देह मिट रहा है और अहम् समाप्त होता जा रहा है।

M. K. Gandhi

चित्र साभार : NCERT

ISSN 2581-8856

सृजन सरोकार

वर्ष 6 | अंक 1 | अक्टूबर–दिसम्बर 2022

अतिथि संपादक
राजेन्द्र कुमार

प्रधान संपादक
गोपाल रंजन

कार्यकारी संपादक
कुमार वीरेन्द्र

कार्यालय
G.H.–1/32 अर्चना अपार्टमेंट्स,
लाल मार्केट के सामने, पश्चिम विहार,
नई दिल्ली–110063

RNI NO. DELHIN/2017/74159

ISSN 2581-8856

सृजन सरोकार

वर्ष 6 | अंक 1 | पूर्णांक 16 | अक्टूबर–दिसम्बर 2022

अतिथि संपादक
राजेंद्र कुमार

प्रधान संपादक
गोपाल रंजन

कार्यकारी संपादक
कुमार वीरेन्द्र

सम्पादक मंडल

प्रो० कृष्णचन्द्र लाल
kclal55@gmail.com

प्रो० अजय जैतली
ajayjaitly@gmail.com

डॉ. सुभाष राय
raisubhash953@gmail.com

प्रो० मिथिलेश
onlymithilesh@gmail.com

अरविन्द कुमार सिंह
arvindksinghald@gmail.com

मुद्रक–प्रकाशक
उमा शर्मा रंजन

संपादन सहयोग
अवनीश यादव

कला पक्ष
द पर्पल पेपर, नई दिल्ली

GH-1/32 अर्चना अपार्टमेंट्स, लाल मार्केट के सामने,
पश्चिम विहार, नई दिल्ली–110063
फोन : +91-11-4007 9949
मो.नं. : +91-95554 12177, +91-94156 46898
ईमेल : srijansarokar@gmail.com,
granjan234@gmail.com

मूल्य : 60 रुपए

व्यक्तियों के लिए : 240 रुपए (वार्षिक)
संस्थाओं के लिए : 500 रुपए (वार्षिक)
सृजन सरोकार रजिस्टर्ड डाक से मँगाने हेतु एक वर्ष का डाक खर्च 120 रुपए अतिरिक्त
सौजन्य सदस्यता : 5000 रुपए

notnul.com और srijansarokar.page पर भी उपलब्ध

शुल्क सृजन सरोकार के नाम से निम्नलिखित खाते में भेजें
Bank Name : The Nainital Bank Ltd., New Delhi
A/C No. : 0492000000012646
IFSC : NTBL0DEL049

स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक उमा शर्मा रंजन द्वारा
एस.आई. प्रिंटर्स, 1534, कासिम जान स्ट्रीट, बल्लीमारान,
दिल्ली–110006 से मुद्रित एवं
GH-1/32 अर्चना अपार्टमेंट्स, लाल मार्केट के सामने, पश्चिम विहार,
नई दिल्ली–110063 से प्रकाशित
सम्पादक :* गोपाल रंजन

संचालन संपादन अवैतनिक

सभी विवाद दिल्ली न्यायालय के अधीन।
प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। इससे संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं।
* सामग्री चयन के लिए पीआरबी एक्ट–1867 के तहत जिम्मेदार

अनुक्रम

संपादकीय

गांधी में कौन से गांधी को हमें तलाशना है?
–राजेन्द्र कुमार ____ 4

अपनी बात

अनुपस्थित उपस्थिति का समीकरण ____ 8

खण्ड–1 : आलेख–गांधी में आज के गांधी की खोज ____ 9

गांधी–विचार और मनुष्य की अस्तित्व–रक्षा का प्रश्न–अरुण कुमार ____ 10

गांधी : आधुनिकता और स्वराज
–अच्युतानंद मिश्र ____ 15

गांधी से बड़े गांधी–भरत प्रसाद ____ 20

गांधी का आख़िरी आदमी
–ए. अरविंदाक्षन ____ 25

गांधी और ट्रस्टीशिप की अवधारणा
–रवि भूषण ____ 28

ग्राम स्वराज और गांधी–ज्योतिष जोशी ____ 37

गांधी की किसान–दृष्टि–अवधेश प्रधान ____ 44

गांधी का असहयोग आन्दोलन और हिंदी समाज–सुजीत कुमार सिंह ____ 48

बदलते भारत में गांधी–सेवाराम त्रिपाठी ____ 54

रवि बाबू, गांधी और चरखा–प्रसंग
–कर्मेंदु शिशिर ____ 62

आज के गांधी और भारतीय राजनीति
–हिलाल अहमद ____ 67

प्रार्थना के शिल्प में डूबे गांधी
–पंकज पराशर ____ 72

गांधी से असहमति–कँवल भारती ____ 79

गांधी : स्वाधीनता आन्दोलन और आज का समय
–सुधांशु कुमार मालवीय ____ 84

खण्ड–2 : परिचर्चा–गांधी–विचार का भविष्य ____ 89

प्रस्तुति – मनोज मोहन ____ 90

गांधी : एक सजग सभ्यता
–अशोक वाजपेयी ____ 91

परंपरा और आधुनिकता : द्वैत और अद्वैत
–कुमार प्रशांत ____ 94

सकारात्मक और सर्वसमावेशी दृष्टि
–ब्रज रतन जोशी ____ 96

भारतीय लोकतंत्र की संकल्पना
–उदयन वाजपेयी ____ 97

सरलता का काठिन्य–प्रियदर्शन ____ 100

संदेह बनाम आश्वस्ति–निशिकांत कोलगे ____ 101

परंपरा और आधुनिकता की परस्परता
–सुभाष शर्मा ____ 104

सुमिरन

गांधी : वैचारिक सान्निध्य–अवनीश यादव ____ 108

लक्षित–अलक्षित

गांधीवादी आलोचना–कुमार वीरेन्द्र ____ 110

गांधी में कौन से गांधी को हमें तलाशना है?

रिचर्ड ऐटनबरो की फ़िल्म 'गांधी' की शुरुआत का एक दृश्य याद आ रहा है। गांधी के जीवन की आखिरी शाम है। उमड़ता जन-समूह जिज्ञासु है-'गांधी कहाँ मिलेंगे?' एक आवाज़ उभरती है-'प्रार्थना-सभा में जाइए। जाइए, बापू वहीं मिलेंगे।'

आज हम किससे पूछें-गांधी कहाँ मिलेंगे। गांधी कहीं नहीं हैं। जाने हमने उन्हें कहाँ खो जाने दिया है। सिर्फ़ उनकी मूर्तियाँ हैं, तसवीरें हैं। उनकी गुमशुदगी के इश्तिहारों-सी।

कुछ जगहें हैं, वीरान आश्रमों की तरह, जो अब गांधी से संबंधित वस्तुओं का संग्रहालय मात्र बनकर रह गई हैं। कुछ संस्थान हैं, जो गांधी को सिर्फ़ बौद्धिकोपयोगी अध्ययन का विषय बनाकर रख देने में कृतार्थ हो रहे हैं। गांधी ने जिस सकर्मकता को अपने व्यक्तित्व की पहचान की तरह अर्जित किया था, वह मानों कुछ शिलाओं पर उकेरी गई इबारत भर समझ ली गई है, जिसे पढ़ने के लिए, मन करे तो इतिहास के खंडहरों में जाया जा सकता है।

कुछ ऐसे भी हैं, जिन्हें लगता है, गांधी का भूत उनका पीछा कर रहा है। इस भूत-बाधा से मुक्त होने के लिए वे 'गोडसे-गोडसे' का जाप करने लगते हैं। गांधी के साथ छाया-युद्ध करने को तबीयत मचलती है तो 'महात्मा', 'बापू' और 'राष्ट्रपिता' जैसे संबोधनों की नोच-खसोट पर आमादा हो उठते हैं। वे भूल जाते हैं कि ये संबोधन कोई मेडल या बिल्ले नहीं थे कि उन्हें गांधी से छीनकर किसी नरेंद्र मोदी या मोहन भागवत को उनसे विभूषित कर दिया जाए। कुछ ऐसी विभूतियाँ भी हैं, जो गांधी का नाम सुनते ही इतनी परेशान हो उठती हैं कि सावरकरी मंत्रों से झाड़-फूँक करने लग जाती हैं।

भारत को 'हिंदू-राष्ट्र' बनाने का जो उत्साह आज ज़ोर कर रहा है, वह राष्ट्रोन्नायक है या राष्ट्र-घाती? गांधी होते तो इस प्रश्न पर गंभीरता से सोचने की ज़रूरत पर ज़रूर बल देते। भारत को 'विश्वगुरू' होने की अहम्मन्यता में ग़र्क होना है या 'विश्व मानव' की परिकल्पना का विनम्र प्रस्तावक बनकर गौरव पाना है-इसका फ़ैसला करने का धैर्य हमसे छिनता जा रहा है। गांधी भी अपने को हिंदू कहने में लजाते नहीं थे, लेकिन ऐसा हिंदू कहलाना उन्हें कभी स्वीकार्य नहीं था, जो किसी दूसरे धर्म को अपने धर्म से हीन ठहराने में ही अपने हिंदू होने की प्रामाणिकता मानता हो। हालाँकि सन् 1920 के दशक तक गांधी के संपर्क में आने का उत्साह कुछ ऐसे लोगों में भी था, जिन्हें हिंदू धर्म की रूढ़ियों को भी जनेऊ की तरह धारण किए रहने में अपनी श्रेष्ठता-ग्रंथि की तुष्टि